दिसम्बर 2015

प्रिय प्रार्थाना योद्धा,

इस व्यस्त समय में, यूरोप, अफ्रीका, और मध्य पूर्व में हजारों शरणार्थियों के लिये प्रार्थना में अपना समय देने के लिये हम आपका धन्यवाद करते हैं, इनमें से कई शरणार्थी इसलिये खतरों में रहते हैं क्योंकि वे ईसाई हैं। साल के इस समय, मुझे यह बात याद आती है कि यीशु अपने माता पिता के साथ मिस्र में एक शरणार्थी बन गया था। अपने पूरे जीवन में, ''वह तुच्छ जाना गया, और मनुष्यों द्वारा त्यागा हुआ था.... वह दुखी पुरुष था और पीड़ा से उसकी जान पहचान थी'' (यशायाह 53:3)। इसलिये शरणार्थियों को जिस ड़र, अनिश्चितता, दुख, और अपनान का सामना करना पड़ता है वह उसे समझता है। परमेश्वर के कुछ महान सेवक – दाउद, मूसा, यूसुफ, रूथ, पौलुस और कई दूसरों को भी शरणार्थी बनना पड़ा था। परमेश्वर के चुने हुये लोगों को जंगल में 40 सालों तक भटकना पड़ा था। परमेश्वर ने उन्हें यह आदेश दिया था, ''अगर कोई परदेशी तुम्हारे देश में तुम्हारे साथ रहता है तो उसके साथ अन्याय न करना'' (लैव्य 19:33)।

असंख्य शरणार्थियों के देशों में घुसने पर वहां के लोग जब नाराज़ होते हैं, सरकारें आपस में वाद–विवाद करती हैं कि उनके साथ क्या किया जाना चाहिये, तो मेरे विचार से मानवीय तौर पर इस का कोई आसान उत्तर नहीं निकलता है। दाउद की उस समय की प्रार्थना मुझे याद आती है जब वह अपने देश से निकाला हुआ और त्रस्त था – ''हे परमेश्वर मेरी पुकार सुन, मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे।। जब मेरा हृदय डूबा जाता है तक मैं तुझे पृथ्वी की छोर से भी पुकारूंगा, मुझे उस चट्टान पर ले चल जो मुझ से उँची है।'' (भ सं 61:1–2)।

मित्रों उत्तर यही है। आइये हम प्रार्थना करें कि मसीही लोग इन शरणार्थियों को सनातन चट्टान, यीशु मसीह की ओर ले जायें। हम अपनी प्रार्थनाओं के प्रभाव पर शक न करें, खासतौर से इस ऐतिहासिक समय में। किसी ने कहा था, ''इतिहास मध्यस्तथियों का है जो भविष्य के अस्तित्व में विश्वास करते हैं।'' क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर की शक्ति वर्तमान को बदल सकती है, चाहे यह कितना ही भयंकर और आशाहीन क्यों न हो ? मैं विश्वास करती हूं, क्योंकि हमारा विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।'' हम जब प्रार्थना करते हैं तो हमें एक विकल्प मिलता है, शरणार्थियों के लिये एक बेहतर और सुरक्षित भविष्य। आइये हम स्त्रियों और बच्चें के लिये प्रार्थना करें, जो इतने बड़े पैमाने पर पलायन से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। शरणार्थी शिविरों में काम करने वाले मसीही कार्यकर्ताओं, और प्रार्थनाओं और आशाभरी नारियां कार्यक्रमों के द्वारा यूरोप, अफ्रीका, और मध्य पूर्व में मसीह में आशा बांटने वाली हन्ना परियोजना की टीम के लिये हम परमेश्वर का धन्यवाद करें। हन्ना परियोजना और टी डब्लयु आर यूरोप की भागीदारी के लिये भी प्रार्थना करें जबकि लोगों को उनकी निराशाजनक परिस्थितियों के बारे में बोलने के लिये खास कार्यक्रम बनाये जा रहें हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हम मिलकर, विश्वास के द्वारा, इन प्रिय शरणार्थियों जीवन में आशा से भरा एक नया इतिहास लिख सकते हैं।

मेरे मित्रों, आपका धन्यवाद! आपको एक आशीषित बड़े दिन की शुभ कामनायें!!

मर्ली स्पाइकर

ग्लोबल मिनिस्ट्री डायरेक्टर/फाउन्ड़र

(वैश्विक मिनिस्ट्री निर्देशक/संस्थापक)

प्राजैक्ट हन्ना

(हन्ना परियोजना)